श्रीराम जन्मभूमि

रोमाञ्चकारी इतिहास

हिन्दुओं के ७६ हमले

ले० — स्वर्गीय पं० रामगोपाल पाण्डेय "शारद"

प्र० — बलराम यादव श्रीराम जन्मभूमि श्रीअयोध्याजी ॥

[मूल्य [illegible]]

❀ श्रीरामचन्द्राभ्यां नमः ❀

श्रीरामजन्मभूमि का रोमांचकारी इतिहास

ले०—स्वर्गीय पं० रामगोपाल पाण्डेय "शारद"

❀ कवित्त ❀

बाबर की बाबरी क्रिया का प्रतिशोध लेके ।
संस्कृति की लीक का प्रतीक ठीक जोड़ेंगे ॥ १ ॥
कर्महीन कायर कलङ्की क्रूर कर्मियों के ।
कुटिल कुनीत के दुरूह दुर्ग तोड़ेंगे ॥ २ ॥
"शारद" समस्त विश्व भारत मही में भव्य ।
रम्य राजधानी के पानी को निचोड़ेंगे ॥ ३ ॥
प्राण के भी मूल्य को चुकायेंगे सहर्ष किन्तु ।
श्रीराम की पवित्र जन्मभूमि को न छोड़ेंगे ॥ ४ ॥

❀ जन्म-भूमि ❀

आज से नौ लाख वर्ष पूर्व इसी पावन भूमि पर मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजीने अवतार धारण किया था। इसी पवित्रस्थली की पुनीत रज में लोट पोट कर परात्पर पुराण और पुरुषोत्तम श्री राघवेन्द्रने भरत लक्ष्मण और शत्रुघ्नजीके साथ अपने देवदुर्लभ बाल चरित्र किये थे । ईसा की शताब्दियों पूर्व भारत के राज सिंहासन को सुशोभित करने वाले सम्राटों ने समय समय पर इसकी रक्षा की। इसका जीर्णोद्धार करते रहे । किन्तु किरात सक और हूणोंके आक्रमण के समय क्रमशः हिन्दू राजाओं ने उधर से अपना ध्यान हटा लिया। परिणाम स्वरूप प्राचीन मन्दिर भग्न हो गया और वस्तु

शेष नहीं बची अन्तत: ईशा से लगभग एक शताब्दी पूर्व हिन्दू कुल के देदीप्यमान भानु सम्राट विक्रमादित्य ने बड़े परिश्रम से खोजकर इस पावन भूमि पर बड़ा विशाल मन्दिर बनवा दिया।

कहते हैं कि उस समय भारतवर्ष में केवल ४ मन्दिर सर्वोत्कृष्ट माने जाते थे। इन चार मन्दिरों के टक्कर के मन्दिर संसार भर में कहीं नहीं थे। इन चार मन्दिरों में एक जन्मभूमि का श्रीराम मन्दिर दूसरा कनक-भवन और तीसरा काश्मीर का सूर्य मन्दिर और चौथा प्रभास पट्टम का श्री सोमनाथ मन्दिर।

ईसवी सन् १५२८ में फतेहपुर सीकरी के पास चित्तौड़ के राजा संग्राम सिंह से पराजित होकर मुगल सम्राट बाबर अयोध्या भाग आया उन दिनों श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर पर बाबा श्यामानन्द जी नाम के एक पहुँचे हुए सिद्ध महात्मा निवास करते थे। इनकी सिद्धाई का धाक उस समय समस्त उत्तर भारत में फैली हुई थी। जिससे प्रभावित होकर हजरत कजल अब्बास मूसा आशिकान कलन्दरशाह नाम का एक फकीर आया और बाबा श्यामानन्द का साधक शिष्य बनकर जन्मभूमि पर रहने और योग की क्रिया सीखने लगा। कजल अब्बास जाति का मुसलमान था इसी लिये बाबा श्यामानन्दजी उसे मुसलमानी ढंग से ही योग की शिक्षा देने लगे। जिसके परिणाम स्वरूप कुछ ही दिनों में वह भी पहुँचा हुआ सिद्ध फकीर हो गया और उसकी सिद्धाई की धाक भी फैल गयी, कुछ दिनों पश्चात् जलालशाह नाम का एक और मुसलमान फकीर वहां आया और वह भी श्यामा-नन्दजी का साधक शिष्य बन गया एवं वहीं रहकर योग क्रिया सीखने लगा।

जलालशाह कट्टर मुसलमान था। बाबा श्यामानन्दजी के सहवास से उसे जब जन्मभूमि का एक महत्व विदित हुआ और उसने यह जाना कि यह स्थान सिद्ध पीठ है एक मन्त्र अथवा

अनुष्ठान की योजना वहाँ अनन्त कोटिगुना वृद्धि पाकर फलवती होती है तो उसके दिमागमें इस स्थान को खुर्द मक्का और सहस्रों नबियों का निवास सिद्ध करनेकी सनक सवार हुई। उसके प्रयत्न से बड़ी-बड़ी कब्रें पुराने जमाने के ढंग से बनावाई गई। अयोध्या स्थिति पुराने महर्षियों की समाधि विकृत कर उन्हें कब्रोंके ढंग पर बदल दिया गया। जावेदानी जिन्दगी प्राप्त करने की इच्छा से दूर दूर से मरे हुए मुसलमानों के मुर्दे मँगाये जाकर सारी अयोध्या में दफनाये जाने लगे। भगवान श्रीरामचन्द्रजी की पावनपुरी कब्रों से पाटी जाने लगी।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि बाबा श्यामानन्दकी कृपासे इन दोनों की सिद्धाई की धाक भी दूर-दूर तक पहुँच चुकी थी। फतेहपुर सीकरी के संग्राम में बुरी तरह पराजित होकर बाबर जब प्राण बचाने की इच्छा से भाग निकला तो शान्ति प्राप्त करने की इच्छा से अयोध्या आकर जलालशाह और कजल अब्बास से मिला दोनों फकीरोंने उसे आशीर्वाद दिया कि लड़ाई में तुम्हें अवश्य विजय मिलेगी। यह आशीर्वाद पाकर बाबर लौट गया और ६ लाख सेना लेकर पुनः राणासांगा का सामना किया और उनके ऊपर विजय प्राप्त किया। इस युद्ध में बाबर की ६ लाख सेना से राणासाँगाके ३० हजारसैनिकों का सामना हुआ। जिसमें बाबर के नब्बे हजार सैनिक और राणा के ६०० सैनिक जीवित बचे।

विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर पुनः अयोध्या आया उसके ऊपर अपनी सिद्धाईकी धाक जमाकर जलालशाह और कजल अब्बास ने जन्मभूमि विध्वंश करके उसके ऊपर एक मसजिद बनवा देने की वचन ले लिया। बाबर ने मन्दिर गिराकर मसजिद बनवा देने की आज्ञा अपने वजीर मीरबांकीखाँ ताशकन्दीको देकर दिल्ली चला गया।

मीरबांकी एक जबरदस्त तासुब्बी (जलने वाला) मुसलमान था। बाबरके जाते ही उसने मन्दिर को मिसमार नष्ट कर डालनेकी आज्ञा अपने सैनिकों को दे दी। बाबा श्यामानन्द जी अपने साधक शिष्यों की करतूत पर पछताते हुए प्रतिमा को श्रीसरयूजी में पधार कर और दिव्य विग्रहको अपने साथ लेकर उत्तराखण्ड को चले गये। मन्दिरस्थ पुजारियों ने मन्दिर के पार्षदादि हटा दिये और मन्दिर के द्वार पर खड़े होकर कहा, पहले हम मर जायेंगे तब कोई विधर्मी मन्दिर के अन्दर प्रवेश कर सकेगा जलालशाह की आज्ञा से चारों पुजारियोंका सिर काट लिया गया और लाशें चीलहों कौवों के खाने के लिए बाहर फेंकवा दी गयी और तोपोंकी मारसे मन्दिर भूमिसात कर दिया गया

मन्दिर का सामग्री से ही मस्जिद का बनना आरम्भ हुआ। हम ऊपर लिख चुके हैं कि यह मन्दिर भारत के तत्कालीन के सर्व प्रसिद्ध ५ मन्दिरोंमें सर्वप्रथम था। कहा जाताहै कि इस भव्य प्रसादमें एक सर्वोच्च शिखर और सात कलश थे।

आजकल के मनकापुर से इनका भव्य दर्शन होता था। मंदिरों के चारों ओर लगभग ६ सौ एकड़ का सविस्तृत मैदान था। सुन्दर-सुन्दर उद्यान एवं कुञ्ज थे। उद्यान के बीचो बीच में दो सुन्दर-सुन्दर पक्के-पक्के कूप थे जो क्रमशः मन्दिरके गोपुर के सामने और अग्नि कोण पर स्थिति थे। सामने वाला कूप नवकोण का था। जिसे कन्दर्प कोण कहा जाता था। इस कूप के जल से स्नान कर राजा ययाति ने युवकत्व लाभ किया। अग्निकोण पर स्थिति कूप महाराजा दशरथजीने राजमाता श्रीकौशल्याजीके लिये बनवा दिया था इसका नाम प्रथम ज्ञानकूप था। श्री मिथिलेश राजनन्दिनी सीता जी के विवाह होकर आने पर महारानी श्री कौशिल्या जी ने प्रथम बधू मुख दर्शन में इसे सीता जी को दिया, तब से इसका नाम सीता कूप

पड़ गया। राजमहल के भीतर भोजन आदि इसी कूप के जलसे बनता था। विवाहादि के शुभ कार्य होने पर मातायें कुएँ में पाँव लटकाने का कृत्य इसी कूप में सम्पादन करती थीं।

मन्दिर के पूर्व द्वार पर भव्य गोहर था जिसमें नित्य प्रातःकाल शहनाई में भैरवी और सायंकाल श्याम कल्याण एवं गौरी राग गाया जाता था। दस लक्ष्य रुपया प्रति वर्ष की आय मन्दिर में लगी हुईथी जिससे मन्दिर के उत्सव सम्बन्धी समस्त कार्य बड़े सुव्यवस्थित ढंगसे चला करते थे। बड़े-बड़े विद्वान वेदपाठी ब्राह्मण प्रातःकाल भगवान् की मंगला आरती के समय श्री सूक्त और पुरुष सूक्त का सस्वर पाठ नित्य सुनाया करतेथे मन्दिरके पश्चिम ओर अतिथिशाला थी जिसमें ब्राह्मण साधु अतिथि अभ्यागतों के उचित सत्कार होने का सर्वोत्कृष्ट प्रबन्ध था एक पाठशाला भी थी जिसमें ऋत्विज ब्राह्मण तैयार किये जाते थे जो अष्टांग योग में निपुण वेद शास्त्रों में पारगत होकर देश देशान्तरों में घूम घूम कर आर्य वैदिक संस्कृत धर्म प्रचार करते थे। कसौटी के ८४ प्रस्तर स्तम्भों पर जन्मभूमि का भव्य श्रीराम मन्दिर बना हुआ था।

हिन्दुओं की प्रतिक्रिया

बात की बात में श्रीराम मन्दिर विध्वंश किये जाने की खबर बिजली की तरह भारतवर्ष भरमें फैल गई। फैजाबाद जिले में स्थित भीटी स्टेट के राजा महताबसिंह ससैन्य तीर्थयात्रा के लिये जारहे थे। उन्होंने जब यह समाचार सुना तो अपनी सेना को रोक अञ्जना के बाग में पड़ाव डाल दिया और रात ही रात सलाहकार भेजकर जिले के आस पास रहने वाले समस्त क्षत्रियों को यह समाचार दे दिया। प्रातःकाल सूर्य की किरण फैलने के पूर्व ही दल के दल राजपूत गृहस्थ बादिकों ने आकर चारों ओर से जन्मभूमि को घेर लिया। एकाएक

हिन्दुओं की इतनी जबरदस्त तैयारी देखकर मीरबाँकीखाँ ताशकन्दी के होश उड़ गये। चार लाख मुगल सैनिकों ने बड़े जोरों से अल्ला हो अकबर का नारा लगाया और म्यान से तलवारें खींचकर मन्दिर गिराने वालों की रक्षा के लिये तत्पर हो गये हिन्दुओं ने भी एक बार 'बम महादेव' का भयंकर सिंहनाद किया और भूखे बाघ की भांति मुगल सेना पर टूट पड़े सारी मुगल सेना में चीख पुकार मच गई, १५ दिनों तक रात दिन अनवरत रूप से भयंकर संग्राम में हिन्दुओं और मुसलमानों की लाशों के ढेर लग गये। मुगल सेना के पास बहुत घुड़ सवार सैनिक और चार लम्बी मार की भयंकर तोपें थीं जिनके गोली की मार से हिन्दू सेना तहस नहस हो गई उधर हिन्दुओं के हाथियों के सवारों के भयंकर आक्रमणों ने मुसलमानों की बखिया बिखेर दी। पन्द्रहवें दिन हिन्दुओं की हार हो गई और तोपों की मार से मन्दिर की दीवारें विध्वस्त कर दी गई इस संग्राम में मुगल सेना की ओर से ४॥ लाख सैनिकों ने तथा हिन्दुओं की ओर से एक लाख चौहत्तर हजार सैनिकों ने भाग लिया जिसमें हिन्दू सैनिकों में से कोई जीवित नहीं बचा और मुगल सेना के ४॥ लाख में से केवल तीन हजार एक सौ पैंतालिस सैनिक जीवित बचे। इस युद्ध में भीटी के राजा महताबसिंह, हसवर के राजा रणविजय सिंह, मकरही के राजा संग्राम सिंह आदि मारे गये। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि श्रीराम-जन्मभूमि विध्वंश किये जाने के समय मुगल सम्राट बाबर ने समस्त भारत में एक फरमान निकालकर हिन्दुओं के अयोध्या न जाने का जबरदस्त प्रतिबन्ध लगा दिया था।

मन्दिर के विध्वंस हो जाने पर उसी के मसाले से मस्जिद का निर्माण प्रारंभ हुआ, ब्रिटिश इतिहासकार वेत्ता कनिंघम अपने लखनऊ गजेटियर में २६ वें तथा ३ पृष्ठ पर लिखता है 'जन्मभूमि के श्रीराम मन्दिर को बाबर के वजीर मीरबाँकी द्वारा गिराये जाने के अवसर

पर हिन्दुओं ने अपनी जान की बाजी लगा दी थी और एक लाख छिहत्तर हजार हिन्दुओंकी लाशें गिर जानेके बाद ही बाबर का वजीर मीरबाँकी खाँ ताशकन्दी मंदिर को गिराने में सफल हो सका था। हैमिल्टन ने तो बाराबंकी गजेटियर में यहाँ तक लिखा है कि-जलाल शाह ने हिन्दुओं के खून का गारा बनाकर उसपर लखोरी ईंटों की नीव मसजिद बनाने के लिये दी थी।

इस संग्राम में सबसे भयंकर युद्ध करने वाले वीर देवीदीन पांडे थे यह वीर सूर्यवंशीय क्षत्रियों का पुरोहित अयोध्यास्त सूर्यकुण्ड के समीपके ग्राम सनेथू का रहने वाला था। समस्त सूर्यवंशीक्षत्री इसके प्रभाव से प्रभावित थे। दस सहस्त्र सूर्यवंशी क्षत्रियों की विशाल सेना लेकर बड़े विक्रम के साथ इसने बाबरके वजीर मीरबांकी का सामना किया था एक मुस्लिम सैनिक के फके हुए लखौड़ी ईंट के प्रहार से इसकी खोपड़ी चकनाचूर हो गई तो इसने अपने पगड़ीसेउसे कसकर बांध लिया और अपने घोड़े सहित मीरबाकी के हाथी पर आक्रमण किया मीरबांकी हाथी के हौदे में छिपकर बच गया किन्तु पांडे की तलवार ने हाथी सहित महावत का काम तमाम कर दिया इसीबीचमें मीरबांकी हौदेमेंसे बन्दूक भरकर पांडेके ऊपर गोली चलादी जिससे पांडे की उसी क्षण मृत्यु होगई तुजुक बाबरी में स्वयं बाबर लिखता है कि अकेले देवीदीन पांडे ने सात सौ सैनिकों का बध किया था।

जब मस्जिद बनने लगी तो जितनी दीवार दिनभर में तैयार होती थी वह शामको अपने आप गिर पड़ती थी। मीरबांकी ने दीवार के चारों ओर सैनिकों का पहरा लगाकर आधी-आधी मील तक चारों ओर किसी के न आने की रोक लगा दी किन्तु दीवार का गिरना बंद नहीं हुआ दोनों सिद्ध फकीरों की सिद्धाई हवा खाने चली गई। हैरान होकर मीरबाकी ने सारा समाचार बाबर

के पास लिख भेजा, बाबर ने उत्तर दिया यदि ऐसा है तो काम बंद करके वापस चले आओ किन्तु जलालशाहने कजल अब्बाससे सलाह की तो कजल अब्बास ने उत्तर दिया कि इस पाक सरजमीन पर मसजिद बन गई तो हिन्दुस्तानमें इस्लामकी जड़ जम जायगी। फलतः जलालशाहने बाबरको पत्र लिखा कि काम बंद नहीं किया जा सकता आप खुद तशरीफ लाइये। इन दोनों फकीरों के प्रभाव से बाबर प्रभावित था। अतः वह पुनः अयोध्या आया और अयोध्या के तत्कालीन विशिष्ट सन्त महात्माओं को बुलाकर कहा कि आप लोग राय दें कि मसजिद किस तरह से बने शाह अपनी हठ नहीं छोड़ते हैं। इस पर महात्माओंने उत्तर दिया कि मसजिद के नामसे इसे हनुमानजी बनने नहीं देंगे। इसमें कुछ परिवर्तन करिये। इसके ऊपर सीतापाक स्थान लिखिये इसे मसजिद का रूप न दीजिये तब यह बन सकती है। बाबर ने हिन्दुओं की सारी शर्तें स्वीकार करली और उसीके अनुसार मीनारें गिरा दी गयीं। सदर द्वार में एक चन्दन की लकड़ी लगा दी गयी। बीचोबीच दो गोलाकार चिह्न लगाकर उसमें मुड़िया और फारसी भाषा में श्रीसीतापाक स्थान लिख दिया गया। उत्तर की ओर स्थित श्रीकौशिल्याजी की छठी पूजन स्थान को जो खोद डाला गया था पुनः बनवा दिया गया, चारों ओर जो मन्दिर की परिक्रमा बनी हुई थी उसे उसी प्रकार रहने दिया गया हिन्दू नित्य जब चाहें तब उसमें उनके भजन पाठ आदि कर लेने की स्वतन्त्रता प्रदान की गयी और मुसलमानों को केवल शुक्रवार को जुमे की नमाज पढ़ने के लिये दो घण्टे मात्र आज्ञा प्रदान की गई। इस प्रकार कूटनीति से बाबर ने दुखी हिन्दुओंके आंसू पोंछे और जन्मभूमिका श्रीराम मंदिर गिराकर मसजिद बनाने में सफल हो सका।

श्रीरामजन्मभूमि का रोमाञ्चकारी इतिहास

हिन्दुओं के ७६ हमले

हम ऊपर लिख चुके हैं कि मन्दिर विध्वंस का समाचार पाकर हिन्दू शान्त नहीं बैठे। हसवर के स्वर्गीय राजा रणविजयसिंह की २० वर्षीया अत्यन्त सुन्दरी नवयुवती महारानी जयराज कुमारी ने अपनी तीन हजार स्त्री सैनिकों के साथ जन्मभूमि पर पुनः अधिकार करने के लिये शाही सेना से गौरिल्ला लड़ाई प्रारम्भ कर दी। रानी के गुरू स्वामी महेश्वरानन्द नाम के एक सन्यासी थे जो गाँव-गाँव में घूमकर जन्मभूमि के उद्धारार्थ हिन्दुओं को तैयार करते थे बाबर से लेकर हुमांयू के समय तक बराबर यह दल शाही सेना से टक्करें लेता रहा। हुमांयू के समय से एक बार रानी ने जिनका नाम जयराजकुमारी था जबरदस्त आक्रमण करके पुनः जन्मभूमि पर अधिकार कर लिया। किन्तु तीसरे ही दिन शाही हुकुम आगई और रानी के हाथ से जन्मभूमि छीन ली। अकबर के समय में इस दल ने जन्मभूमि उद्धारार्थ बीस बार आक्रमण किया। आखिरी हमले में शाहीसेना काट डाली गई सारी छावनियाँ फूक दी गई और जन्मभूमि पर पुनः हिन्दुओं का अधिकार हो गया, इस युद्धमें अपने गुरु महेश्वरानन्दजीके साथ रानी बीरगति को प्राप्त हुई। हिन्दुओं ने मसजिद की चहार दीवारी गिराकर बीचोबीच एक चबूतरा बनाकर उसपर भगवान की मूर्ति स्थापित कर दी, राजा बीरबल और टोडरमल की सलाह से अकबरने उसका कोई भी बिरोध नहीं किया बल्कि मुसलमानों को अकबर ने यह सख्त घोषणा करदी कि हिन्दुओंके इस चबूतरे और इस बने हुये खस की टट्टी मन्दिर को तथा पूजा पाठ में कोई किसी तरह का विघ्न उपस्थित न करें अकबर के बाद जहांगीर और शाहजहां के राजत्व-काल तक शांति रही। शाहजहां के पश्चात् उसका पुत्र औरंगजेब जब भारत आया तो उसकी दृष्टि सबसे प्रथम जन्मभूमि पर गई उसने तत्काल अपने सिपहसालार जांबाजखां की अध्यक्षता में एक जबरदस्त

सेना भेज दी अयोध्या में उस समय जानकीघाट पर शिवाजीके पूज्यपाद समर्थ गुरु रामदास जी के शिष्य वैष्णवदास नाम के एक महात्मा थे उनके साथ दस हजार चीमचाधारी साधुओं का एक जबरदस्त गिरोह था। साधु युद्ध विद्या के पूर्ण ज्ञाता थे। जब इस दल को यह पता लगा कि औरङ्गजेब की भेजी हुई एक बड़ी सेना जन्मभूमि को तहस-नहस कर डालने के लिये चली आ रही है तो साधुओं के इस दल ने बात की बात में अयोध्या के आस-पास स्थित गांव में यह खबर बिजली की तरह फैला दी, जिसके फलस्वरूप बात की बात में कई सहस्त्र हिन्दू तैयार होगये और साधुओं गृहस्थोंकी प्रचण्ड सेना उर्वशी कुण्ड पर मुगल सेना का सामना किया सात दिनों के भयंकर संग्राम में साधुवों का जबरदस्त चीमटों की मारसे मुगल सेना के पाँव उखड़ गये और वे घबड़ाकर जिधर पाये उधर भाग निकले जब औरंगजेब के पास यह समाचार पहुँचा तो अत्यन्त क्रोधित हुआ और कई सैनिक पदाधिकारियों को अपदस्थ करके प्रधान सेनाध्यक्ष सैयद हसनअली खां के नेतृत्वमें दूसरी बार ५० हजार सेना देकर जन्मभूमिको विध्वंस करने के लिये भेज दिया। इस दल के लोग इस शाही आक्रमण से बेखबर नहीं थे। सेना आक्रमण करने का समाचार बाबा वैष्णवदास के गुरु गोविन्दसिंह ने तथोत्तर प्रार्थना को स्वीकार कर अपनी सेना के साथ फैजाबाद में सहादतगंज के पास शाही सेना का मुकाबला किया। सिख हिन्दू और साधुओं की भयंकर लड़ाई में पिसकर सारी मुगल सेना तहस नहस हो गई उसका एक भी आदमी जीवित नहीं बचा सैयद हसन भी मार डाले गये। इस भयंकर मार से औरंगजेब बुरी तरह परेशान हो गया। ४ वर्ष तक फिर जन्मभूमि की तरफ आँख उठानें की हिम्मत नहीं की ४ वर्ष के पश्चात् पुनः सुसज्जित मुगल सैन्यने जन्मभूमि पर आक्रमण किया हिन्दू असावधानथे केवल दस सहस्त्र हिन्दुओं का बलिदान लेकर जन्मभूमि फिर परतन्त्र हो गई। पुजारियों ने प्रतिमा छिपा दी और चबूतरा तथा मन्दिर तोड़

डाला गया। नवाब शहादतअली खाँ के समय में जन्मभूमि हस्तगत करनेके लिये राजा गुरुदत्तसिंह आप सुल्तानपुर जिलेमें स्थित अमेठी के राजा थे आपने जन्मभूमिके उद्धार्थके लिये लखनऊके प्रथम नवाब शहादत्त अली खां के साथ घनघोर संग्राम करके उसे पराजित किया था।

क्रमशः हिन्दूओं के आक्रमण हुए किन्तु ये असफल रहे। नासिरुद्दीन हैदर के समय में ३ आक्रमण हुए फिर भी विजय नही मिली। राजा देवीबक्शसिंह के नेतृत्व में अवध के दो चार को छोड़कर सभी राजाओं ने जन्मभूमि पर धावा बोल दिया। यह संग्राम जन्मभूमि के इतिहास में सबसे भयंकर साम्प्रदायिक संग्राम था सात दिनों की लड़ाई में मुगल सेना भागकर खड़ी हुई हिन्दुओं ने तलवारोंसे केवल जन्मभूमिको अपने अधिकारमें करलिया और पुनः खसकी टट्टियों का मन्दिर बन गया। राजा टिकैतराय और राजा मानसिंहकी सलाह से नवाबने पुनः जन्मभूमिके इस मंदिरको बना रहनेकी आज्ञा दे दी और पुनः मन्दिर का निर्माण हो गया। सन् १८५७ के भारतीय विप्लव में मीरअली और रामचन्द्रदास के प्रयत्न से एकबार मुसलमानों द्वारा जन्मभूमि को हिन्दुओं के अधिकार के लिए प्रयत्न किया गया किन्तु कूटनीतिज्ञ अंग्रेजों के कारण इसमें सफलता नहीं मिली मौलवी मीरअली के नाम से एक मुसलमानों ने जेहाद का नारा लगाकर एक मन्दिरस्थ चबूतरा खोद डालने के लिए प्रस्थान किया किन्तु अमेठी के राजकुमार जयदत्त के द्वारा रौनाहीके पास मार डाला गया। अंग्रेजों के राजत्वमें भी हिन्दुओं के द्वारा जन्मभूमि पर अधिकार कर लेनेके लिये दो आक्रमण हुए जिसमें एक सन् १६१२ में और दूसरा १६३०में हुआ किन्तु इसमें सफलता नहीं मिली। बाबर के समय से लेकर अंग्रेजों के समय तक जन्मभूमि के उद्धारार्थ हिन्दुओं द्वारा ७६ आक्रमण हुए जिनका विवरण इस प्रकार है।

बाबर के समय में ४, हुमांयू के समय में १०, अकबरके समय में २०, अंग्रेजों के समय में ३०, नवाब शहादत्तअली के समय में ५, नासिरुद्दीन हैदर के समय में ३, वाजिदअली के समय में २, अंग्रेजों के समय में २, कुल योग ७६ ।

सबसे अन्तिम संग्राम जिसमें शाही सेना खड़ी तमाशा देखती थी और हिन्दू मुसलमान आपसमें लड़कर फैसला कर रहेथे यह सन् १८६५ में हुआ था। जिसमें सबसे बढ़कर हानि मुसलमानों की हुयी ।

❁ आन्दोलन के सहायक ❁

श्रीरामजन्मभूमि आन्दोलन में जिन लोगों ने प्राणप्रण से सहयोग दिया, उनमें अयोध्या के प्रमुख सन्त श्रीरामपदार्थदासजी वेदान्ती, महान्त भगवानदासखाकी पं०श्रीहनुमानदत्त, बाबा उद्धवदास रामायणी पं० श्रीअखिलेश्वरदासजी, महान्त श्रीरघुनन्दनशरणजी, पं० चन्द्रेश्वर प्रसाद, बाबा श्रीअभिरामदासजी प्रभृति के उल्लेखनीय हैं। प्रादुर्भूत भगवानके सामने जिलाधीशकी संगीनके सम्मुख बाबाअभिरामदासजी ने अपनी छाती तान दी थी। परमहंस श्रीरामचन्द्रदासने फाटक खोलने तथा सभी मण्डप के निर्माणार्थ अनशन किया। उनके अनशनके समर्थनमें मेरा व्याख्यान हुआ फलस्वरूप भारत रक्षाकानून के अन्तर्गत हम दोनों आदमी एक मास तक नजरबन्द रखकर छोड़ दिये गये । बाबा अभिरामदासजी तथा इन पंक्तियों के लेखकको अन्त काल तक लगी रहने वाली धारा १४४ तोड़ने के आरोप में एक मास का कारावास तथा ५० रुपया अर्थ दण्ड न देने पर एक सप्ताह की सजा सुनाई गयी । कब्र को विक्षत करने का अपराध श्रीभास्करदास पर ५वर्ष तक मुकदमा चला अन्तमें मुकदमा पक्षमें रहा। अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ । जबतक कोई निर्णय न हो तबतक हम इस सम्बंध में कुछ लिखने में असमर्थ हैं। श्रीराम जन्मभूमि का मुकदमा ३६

वर्षों से चल रहा है जिसका कोई निर्णय अभी नहीं हो पाया है अतः उसके सम्बन्ध में अभी हम कुछ लिख नहीं सकते अभी तक जिन तथ्यों का सिंहावलोकन किया गया है वह केवल प्रस्तुत विषय का भूमिका मात्र है और पाठकों को अभी केवल इतने से ही सन्तोष कर लेना चाहिये। अखण्ड कीर्तनका संचालन प्रथम श्रीजनक-नन्दिनीशरणजी इसके पश्चात् बाबा श्रीरामलखनशरणजी, अब अखण्ड कीर्तन संचालक रामदयालशरणजी अनेकानेक कठिनाइयाँ उठाते हुए चला रहे हैं श्रीउद्धवदासजी वाराणसीने सभा मण्डप में कई मासतक कथा बांची थी इस समय उसका संचालन पं० हनुमानदत्तजी कर रहे हैं फैजाबाद के वकीलों में चौधरी श्रीकेदारनाथ मिश्र पं० श्रीराम मिश्र ठाकुर महावीर प्रसादसिंह आदि ने श्रीरामजन्मभूमि सम्बन्धी समस्त मुकदमों की बिना शुल्क पैरवी की। भारत में प्रसिद्ध धन कुबेर श्री युगल किशोर 'बिरला' कल्याण सम्पादक हनुमान प्रसाद पोद्दार ने आर्थिक सहायता प्रदान की और कर रहे हैं।

जिस प्रकार मुसलमानों का बाबरी मस्जिद के नामपर व्यवसाय चल रहा है। उसी प्रकार हिन्दुओं में बहुत से ठग श्रीरामजन्मभूमि के नाम पर गली गली चन्दा माँग रहे हैं। यह सारा चन्दा उनके पेट में जारहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने को रामजन्मभूमि का उद्धारक कहता है। कोई अपने को जन्मभूमि का महन्थ कहकर चन्दा माँगते हैं। कोई अपने ऊपर १४ मुकदमा चल रहा है यह कहकर चन्दा मांगते हैं जनता को यह जान लेना चाहिए कि यहसब ठग हैं। उनकी बातों में सत्यता का तनिक भी लेश नहीं है १०-१-५० से जो मुकदमा चल रहा है उस मुकदमे का समस्त व्यय श्रीसेठ युगलकिशोर बिड़ला तथा हनुमान प्रसाद पोद्दार वहन कर रहे हैं प्रादुर्भूत भगवान के भोग राग का समस्त प्रबन्ध टंगे हुए बक्सों की आय से रिसीवर महोदय द्वारा होता है और कोई विभाग ऐसा है ही नहीं जिसके लिए रुपये की आवश्यकता है जनता अपना धन यदि मन्दिरस्थ भगवान के राग भोग के लिए देना चाहते हैं तो उनको चाहिए कि वह अपना द्रव्य

या तो मन्दिर में टंगे बक्स में डाल दें अथवा डाक के द्वारा रिसीवर के पास भेज दें। मुकदमेके लिये देना चाहते हैं तो कल्याण सम्पादक के पास गोरखपुर भेज दें और अखण्ड कीर्तन के लिए देना चाहतेहों तो उसे रामदयालशरणजी संचालक अखण्ड कीर्तन श्रीरामजन्मभूमि अयोध्या के नाम भेजदें या स्वयं उनसे मिलकर उन्हें दे दें, अन्यकिसी व्यक्ति को वह देते हैं तो समझ लेना चाहिए कि उनका श्रीरामजन्म-भूमि से कोई सम्बन्ध नहीं है और वह रुपया बट्टे खातेमें चला गया।

❀ जन्मभूमि में हिन्दू चिन्ह ❀

मन्दिर को तोड़कर मसजिद का रूप देने में हिन्दू चिन्ह शेष रह गये हैं जिन्हें दीवारों के आप से आप गिर जाने के कारण बाबर को जबरदस्ती रखना पड़ा था जिसका विवरण निम्नलिखित है।

मीनार का न होना। पक्के परिक्रमा का रहना। वजू के लिए किसी कुएँ का न होना। सदर गुम्बद वाले दरवाजे में चन्दन की एक झिल्ली लगाकर मन्दिर के नियम का पालन किया जाना। झरोखों का रहना तथा निचले द्वार पर अरबी में लिखे अल्ला के किनारे मुड़िया भाषा में सीता पाक लिखा रहना।

—: कसौटी के स्तम्भ :—

प्राचीन श्रीराम मन्दिर कसौटी के ८४ स्तम्भों पर बना हुआ था, खम्भा को सूर्यवंश के मध्यम कालीन राजा अरण्य ने बनवाया

था, जिसे अनरण्य को पराजितकर रावण उठा ले गया था। लंका विजय के पश्चात् भगवान श्रीराम जिन्हें पुनः अयोध्या ले आये थे। जिसपर शंकर गणेशादेव आदि के चित्र खुदे हुए थे। इन्हीं खम्भोंपर मसजिद बनाई गई जिसमें पूर्वोक्त मूर्तियां अभी भी बनी हुई हैं तथा किसी खम्भे पर महाराजा अरण्य-रावण और भगवान श्रीराम की लिखी हुई प्रशस्तियां अभी तक पायी जाती हैं।

कसौटी के ८४ स्तम्भों में ११ बाबरी मसजिद में तथा दो मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक फजल अब्बास की कब्र में व कुछ लखनऊ फैजाबाद संग्रहालय में और कुछ लन्दन के संग्रहालय में शोभा बढ़ा रहे हैं।

विशेष जानकारी के लिये 'श्रीरामजन्मभूमि का रक्तरंजित इतिहास' तथा अयोध्याजी का प्राचीन इतिहास मँगा कर पढ़ें।

❁ सूचना ❁

श्रीसीताराम राधेश्याम मिष्ठान तथा प्रसाद वा जन्मभूमि का रक्त रंजित इतिहास एवं रोमांचकारी इतिहास तथा समस्त अयोध्या धार्मिक पुस्तक उचित दामों पर उपलब्ध है।

निवेदक :—
धर्मपति राम यादव
श्रीराम जन्मभूमि, श्रीअयोध्या।

मुद्रक:—मनोरमा प्रिंटिंग प्रेस, श्रीअयोध्याजी।